शिक्षण संवाद

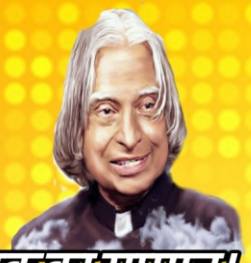

शिक्षा का उत्थान,

माह - नवम्बर २०१८

शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष - १ अंक - ५

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-५

माह-नवम्बर २०१८

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. सर्वेष्ट मिश्र
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7
मिशन शिक्षण संवाद–एक जज्बा	8
मिशन गीत	9
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	10–13
निन्दक नियरे राखिए	14–15
टी.एल.एम.संसार	16–17
इंग्लिश मीडियम डायरी	18
शिक्षण गतिविधि	19
प्रेरक–प्रसंग	20
सद्विचार	21–22
बाल साहित्य	23
बच्चों का कोना	24–25
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	26
माह का मिशन	27
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	28–29
कस्तूरबा विशेष	30–31
योग विशेष	32
खेल विशेष	33–34
मिशन उपस्थिति	35

शुभकामना संदेश

परिषदीय शिक्षक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में नौकरी करते हैं। कई कर्मठ शिक्षक सुदूर क्षेत्र में जाते हैं और वहाँ भी अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। मैंने पाया है कि मिशन शिक्षण संवाद द्वारा जब अनमोल रत्नों की कोई पोस्ट साझा की जाती है तो उससे कई शिक्षकों को प्रेरणा मिलती है कि कैसे विपरीत परिस्थितियों से जीता जाए। प्रत्येक विषय की उम्दा टीएलएम भी उपलब्ध हैं। एक-दूसरे से सीखने का ये वातावरण तैयार करने के लिए निश्चित ही मिशन शिक्षण संवाद बधाई का पात्र है।

मुझे जानकारी मिली कि जुलाई-2018 से मिशन शिक्षण संवाद प्रतिमाह एक ऑनलाइन पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका में भी एक से एक शिक्षकोपयोगी स्तम्भ हैं। शिक्षण में नयी तकनीकी की बात है तो बच्चों का कोना भी है। ऑनलाइन पत्रिकाओं की एक अच्छी बात ये होती है कि ये सर्वसुलभ होती हैं।

मैं शिक्षण संवाद पत्रिका के नवम्बर अंक की सफलता की कामना करती हूँ और अपनी अनन्त शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

एश्वर्या
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
रामपुर

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

सम्पादकीय

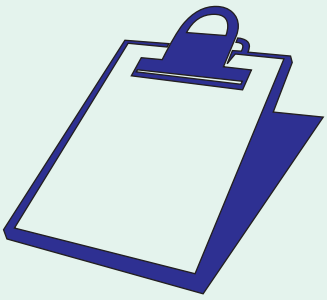

जितना सुखद ये तथ्य है कि हम शिक्षक हैं उतना ही सुखद ये सत्य है कि हम भारत में रहते हैं। भारत वो देश है जहाँ हर दिन एक उत्सव मनाया जा सकता है। इस माह हम भारतीयों का सबसे बड़ा उत्सव दीपावली है। जैसे दीपावली में प्रत्येक व्यक्ति दीपक जलाकर अपने चारों ओर का अंधकार दूर करता है। वैसे ही मिशन शिक्षण संवाद भी अपने क्रियाकलापों से नकारात्मकता के अंधकार को दूर करने का प्रयास करता है।

हम प्रतिदिन कुछ न कुछ ऐसा नया लाने का प्रयास करते हैं जिससे कुछ नया सीखने को मिले। किसी विषय के सपाट शिक्षण में समस्या आ रही है तो उसके लिए टीएलएम की फुलझड़ी उपलब्ध है, कहीं अनुशासन की समस्या है तो गतिविधियों के अनार प्रस्तुत हैं, कहीं विषयों की नीरसता शिक्षण में आड़े आ रही है तो नवाचार का अनार उपस्थित है, कहीं अनेक कक्षा–एक शिक्षक की स्थिति है तो आईसीटी की चकरी दृष्टिगत है।

इसी क्रम में मिशन के प्रत्येक आयाम के समावेश के रूप में मासिक पत्रिका का सुतली बम प्रकाशित होता है। हम पत्रिका में योग से लेकर विचारशक्ति तक और खेल से लेकर निन्दक नियरे राखिए तक अनेक रोचक स्तम्भ प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा करते हैं कि पूर्व के अंकों की भाँति माह नवम्बर का अंक भी आपके लिए उपयोगी होगा। शिक्षण संवाद पत्रिका के नवम्बर अंक को ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ आपको सौंप रहा हूँ।

विचारशक्ति

मैं आज आपके सामने अपना एक अनुभव रख रहा हूँ, जो शिक्षा के क्षेत्र में वास्तव में बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करेगा क्योंकि ये प्रयोग मैंने अपने विद्यालय में किया और आज उसके परिणाम मेरे समक्ष है। मित्रों मैं बुन्देलखण्ड के सबसे पिछड़े जिलों में से एक महोबा के जूनियर विद्यालय में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत हूँ। जब मैं विद्यालय गया तो मैंने देखा कि बच्चे पढ़ने में तो अच्छे हैं पर लकीर के फकीर हैं, अर्थात उनमें सीखी हुई बातों के व्यावहारिक प्रयोग में कठिनाई है।

बच्चे ज्ञान के विस्तार के स्थान पर रटने पर अधिक ध्यान देते हैं। कुछ समय बाद मैं मिशन शिक्षण संवाद के सम्पर्क में आया और मेरे अंदर भी कुछ नवीनता के साथ अधिगम को प्रभावी बनाने की ललक जागी, पर ऐसा क्या किया जाए जिससे हम वास्तव में बच्चों के अधिगम को प्रभावी और उन्नत बना सकें। तब एक दिन मेरे मन में विचार आया कि क्यों न मैं बच्चों को कुछ बिन्दु देकर उस पर कहानी लिखने को कहा जाए और प्राप्त कहानियों को उन्हीं बच्चों से सुनते हुए उनकी समीक्षा भी दूसरे बच्चों से करवायी जाए, जिससे कि उनके अंदर झिझक समाप्त होगी और साथ ही साथ उनमें विचारों का प्रवाह भी होगा जिससे वे किसी मुद्दे, विषय पर गम्भीरता से सोचने के लिए मजबूर होंगे तथा इसके माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन भी अच्छे से हो सकेगा। इसके लिए मैंने शनिवार का दिन चुना क्योंकि उस दिन बच्चों को बालसभा के लिए समय दिया जाता है।

पहले मैंने उनको सरल विषयों यथा– राजारानी, व्यापारी, किसान, जानवरों आदि पर कहानी लिखने को कहा। इसका बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव हुआ और बच्चे बड़ी लगनशीलता से अपने विचारों को उकेरने लगे कुछ समस्याएँ भी आयीं जैसे कुछ बच्चे विचार ही नहीं कर पा रहे थे कि क्या लिखें, कहानी कैसे बढ़े, नवीनता और शब्दों को कैसे जोड़ा जाए आदि–आदि।

तब मैंने ऐसे बच्चों को कुछ भी लिखने से रोकते हुए कुछ समय तक अन्य बच्चों द्वारा लिखी कहानियों को सुनने के लिए प्रेरित किया और आगामी समय मे उन्होंने प्रेरित होकर तीव्रता से कहानी बनाने के गुर सीखे। अगले चरण में मुहावरे ओर लोकोक्तियों पर कहानी लिखने को कहा गया और बच्चो ने सकारात्मकता दिखाते हुए अच्छा प्रदर्शन किया।

मित्रो वर्तमान समय में कहानी लेखन के तृतीय चरण में उन्हें गणितीय तत्वों को शामिल करते हुए उन पर कहानी लिखने को दी जाती है और वे बहुत ही सटीक कहानियाँ लिखते हैं। मित्रों कहानी लिखते–लिखते वे इन चीजों का व्यावहारिक उपयोग भी सीख गये जो मेरा परमोद्देश्य था।

मिशन का विचारशक्ति ही वो शब्द था जिससे मुझे एक नवीन विचार मिला और मैं इसका सफल प्रयोग कर सका।

सुनील पाठक
UPS, atrarmaf
कबरई,महोबा

"मिशन शिक्षण संवाद: एक जज्बा–एक जिद, अपने हुनर से गरीबों बच्चों की जिंदगी संवारने की"

जी हां, ऐसे में जब आए दिन सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की दुर्दशा की कहानी आम लोगों की जुबान से सुनने को मिल रही थीं तो अचानक "मिशन शिक्षण संवाद" के बैनर तले एकजुट हुए हुनरमन्द ऊर्जावान स्वयंसेवी प्राथमिक शिक्षकों की जिद और उनके जज्बे ने परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों की पहचान ही बदल डाली। ऐसे शिक्षकों ने अपने नवाचारी एवं रचनात्मक दृष्टिकोण से विद्यालयों को नए रंग–रूप देकर अपने हुनर से बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में बेहतरीन कार्य कर समाज को सकारात्मक संदेश देने का कार्य किया है।

आज मिशन समूह में शामिल शिक्षक न केवल अपने विद्यालयों में बच्चों को बेहतर शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं वरन वह बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु विविधि प्रकार की गतिविधियों व नवाचारों का प्रयोग कर उन्हें हुनरमंद बनाकर उनकी जिंदगी संवारने में कोई कोर कसर नही छोड़ रहे। इन शिक्षकों द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु अपने विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के पर्वों व त्यौहारों पर विविध प्रकार के आयोजन किए जाते हैं। वार्षिकोत्सव का आयोजन हो या शैक्षिक भ्रमण, विज्ञान प्रतियोगिताएं हों या दीप सजाओ, राखी बनाओ, पेंटिंग, आर्ट एवं क्राफ्ट, संगीत, नृत्य जैसी प्रतियोगिताएं यह शिक्षक नित नए प्रयोग कर बच्चों को उनका हिस्सा बनाकर उनके जीवल कौशल में वृद्धि कर रहे है। वर्तमान में मिशन से जुड़े शिक्षक शिक्षा में सूचना तकनीक का प्रयोग कर अपने निजी संसाधनों से विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाओं की स्थपना कर बच्चों को कम्प्यूटर तकनीक की प्रयोगात्मक कक्षाएं देने का कार्य कर रहे है। शिक्षकों के इन क्रिया कलापों से न केवल बच्चों को हुनरमंन्द बनाकर उनका भविष्य संवार रहे है बल्कि उनके गरीब परिवारों के लिए रोजगार के साधन भी तैयार कर रहे है।

आजकल बेसिक शिक्षा विभाग में ऐसे शिक्षकों की संख्या है बहुत है जो विभिन्न प्रकार की महंगी तकनीकी एवं कौशलपरक शिक्षा–दीक्षा लेकर प्राथमिक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। अब ऐसे शिक्षकों को मिशन के साथ जुडकर अपने हुनर व कौशल को नई पीढी में हस्तांतरण करने का सुअवसर मिल गया है। हजारों की संख्या में ऐसे शिक्षक अपने कौशलों को अपने व्यक्तिगत संसाधनों के साथ अपने स्कूल के बच्चों को देने का कार्य कर रहे हैं। मिशन के साथ जुड़कर ऐसे शिक्षक जहां अपने बेहतरीन कार्यों से बच्चों का भविष्य सवांर रहे हैं वहीं समाज व विभागीय अधिकारियों को भी सकारात्मक संदेश देने का कार्य कर रहे है। प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी, अपर निदेशक बेसिक शिक्षा सुश्री ललिता प्रदीप जी सहित विभिन्न जनपदों के जिलाधिकारी व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी गण व प्रशासनिक अधिकारी मिशन से जुड़े इन शिक्षकों के कार्यो के आधार पर लगातार उनका मनोबल बढा रहे हैं।

वर्तमान मे प्रदेश में जिन विभिन्न शिक्षकों ने अपने विभिन्न कौशलों को बच्चों में उतारकर अपनी अलग पहचान बनाई है उसमें नृत्यकला की शिक्षा में गाजीपुर की शिक्षिका प्रियंका यादव, विज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में झांसी के शिक्षक खुर्शीद हसन व देवरिया के खुर्शीद अहमद, रद्दी की चीजों से सजावटी सामानों को बनाने की कला सिखाने में बस्ती के अनुदेशक आलोक शुक्ल, गायन के क्षेत्र में भदोही के कुंदन राय, जौनपुर के शिक्षक सिंह शिवम, बनारस की छवि, मथुरा की उमा पराशर व जार्ज एंथेनी, कहानी के माध्यम से शिक्षण करने मे फतेहपुर की शिक्षिक आसिया फारूकी, कठपुतली के माध्यम से शिक्षण में जौनुपर की प्रीती श्रीवास्तव व लखनऊ की सुरभि शर्मा, पेटिंग के क्षेत्र में गौतमबुद्व नगर की नीरव शर्मा, आजमगढ की प्रज्ञा राय, चित्रकारी में फर्रूखाबाद के शिक्षक अर्पण शाक्य व प्रयागराज की कुसुमलता भाष्कर, टीएलएम निर्माण में चित्रकूट के राजकुमार शर्मा, मल्टीमीडिया के क्षेत्र में हमीरपुर के वीरेन्द्र परनामी सरीखे शिक्षकों ने प्रदेश ही नहीं पूरे देश में अपने हुनर से अपनी शिक्षण कला को नया आयाम देकर अपनी अलग पहचान बनाई है। समूचे शिक्षा जगत को ऐसे हुनरमंद शिक्षकों पर नाज है।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र,
संपादक, मिशन शिक्षण संवाद/
राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, जनपद–बस्ती

मिशन गीत

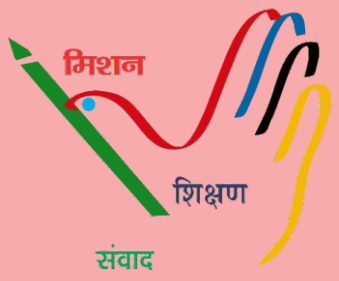

मिशन शिक्षण संवा्आद, मिशन शिक्षण संवा्आद
मिशन शिक्षण संवा्आद, मिशन शिक्षण संवा्आद

लेकर चलते नया हौंसला कुछ अध्यापक घर से
करने को परिवर्तन शिक्षा में अंदर बाहर से
घोर अशिक्षा से हर दिन ही होता उनका रण है
उन्हें प्रेम है बच्चों से, परिवर्तन उनका प्रण है

तभी तो घर जाकर भी बच्चे करते उनको याद
मिशन शिक्षण संवा्आद, मिशन शिक्षण संवा्आद

हर बच्चे में कुछ तो गुण हैं, शिक्षक को विश्वास
जो बैठा पिछली लाइन में उसे भी लाना पास
हर बच्चे का अलग तरीका अलग सीख का ढंग है
हर बच्चा एक अलग फूल है सबका अपना रंग है

तिरस्कार की मार से कोई ना हो अब बर्बाद
मिशन शिक्षण संवा्आद, मिशन शिक्षण संवा्आद

विद्यालय को सुंदर करना सब दीवारों पे रंग भरना
शिक्षाप्रद कुछ खेल खिलाना बाल सुलभ कुछ बातें करना
नवाचार और नए तरीके जिनसे बच्चा जल्दी सीखे
और करना कुछ नया नया सा जिससे कुछ परिवर्तन दीखे

कर ना सके हम अब तक लेकिन अब हैं हम आजाद
मिशन शिक्षण संवा्आद, मिशन शिक्षण संवा्आद

अब अधिकारी टीम का हिस्सा बनें न बनकर बॉस
ब्यूरोक्रेसी ने करवाया अब तक काफी लॉस
इक इनवायरमेंट बनाएँ जिसमें नहीं घुटन हो
रिश्वतखोरी या शोषण की शिक्षक में ना चुभन हो

फिर देखो कितना होता है ये गुलशन आबाद
मिशन शिक्षण संवा्आद ,मिशन शिक्षण संवा्आद

नन्हें पौधों को दे धूप, हवा, पानी और खाद
मिशन शिक्षण संवा्आद ,मिशन शिक्षण संवा्आद

नित्य नवीन नवाचारों की करता है ईजाद
मिशन शिक्षण संवा्आद , मिशन शिक्षण संवा्आद

माँगेंगे अधिकार भी लेकिन कर्तव्यों के बाद
मिशन शिक्षण संवा्आद ,मिश ान शिक्षण संवा्आद

काम दिखाया करके ऐसा देनी होगी दाद
मिशन शिक्षण संवा्आद , मिशन शिक्षण संवा्आद

हिमांशु चौहान "ला–पर–वाह!"
उ. प्रा. वि.–पदियानगला
वि.क्षे.–भगतपुर टांडा
जनपद– मुरादाबाद

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

अनमोल रत्न–1

डॉ0 श्रद्धा अवस्थी,
उच्च प्राथमिक विद्यालय सनगांव,
हसवाँ, फतेहपुर

जब मैंने विद्यालय में कार्यभार सँभाला, मुझे 4 कमरों तथा एक ऑफिस की सफेद इमारत प्राप्त हुई थी जिसमें अन्य कोई रंग छू भी नहीं गया था।

अब मैंने विद्यालय में तीनों भाषाओं(हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत) में सदवाक्य लिखवाये, पूरी दीवार का भारतवर्ष के मानचित्र, उसके बगल में राज्य और राजधानी के नाम, विज्ञान के मॉडल, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण इत्यादि पेंटर से पेंट कराये। ये सभी कार्य मैंने अपने वेतन के अंश से किया है, जिसकी मुझे खुशी है।

क्यारियाँ बनवाकर पौधे रोंपे गये जिससे हरियाली हो गयी।

वृक्षारोपण, पल्स पोलियो पिलाना, महापुरुषों की जयंती मनाने के अतिरिक्त सभी सामाजिक त्यौहारों में भी विद्यालय हर्ष व उल्लास से शामिल होता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें–

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_31.html

अनमोल रत्न–2

रजनीश द्विवेदी, उच्च प्राथमिक विद्यालय बाबटमऊ, माधौगंज, हरदोई

जब 2017 में मैंने विद्यालय का चार्ज लिया उस समय यह एक टूटा–फूटा अव्यवस्थित विद्यालय था। जहाँ छात्र उपस्थिति जैसी अनेकों व्यवहारिक समस्याएँ थी। मैंने चार्ज लेने के उपरांत कुछ कर दिखाने का संकल्प लिया। सबसे पहले मिड–डे–मील की गुणवत्ता सुधारी। उसके बाद स्कूल में टूटे हुए फर्नीचर की वेल्डिंग कराई। स्कूल में कबाड़ में जमा झूलों को लगवाया। स्कूल में 5 साइकिल को टायर ट्यूब डलवाकर उनको चलने योग्य बनवाया। विद्यालय में 1 हाल जो बनने के बाद बन्द पड़ा था, जिसमें धूल मिट्टी कबाड़ के सिवा कुछ न था उसको खुलवाया, जिसमें साँप, बिच्छू भी निकले। सफाई कराकर उसको बैठने योग्य बनवाया। प्रत्येक रूम में 1 एक पंखा लगवाया, जबकि हाल में 2 पंखे लगवाये। स्कूल की साफ–सफाई कराके अब छात्रों को स्कूल तक लाने का प्रयास प्रारंभ हुआ। मेहनत रंग लाई और छात्रों की संख्या बढ़ने लगी। प्राइवेट स्कूलों से नाम कटाकर बच्चे स्कूल आने लगे।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें–

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_56.html

अनमोल रत्न–3

गीता यादव, प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय मुरारपुर,
विकास खण्ड– देवमई,
जनपद फतेहपुर

सर्वप्रथम मैंने विद्यालय के अभिलेखों को व्यवस्थित करने का काम किया। साथ ही ग्रामीणों से अपने घर के गन्दे पानी को विद्यालय में आने से रोकने का निवेदन किया और साथ ही उन्हें विद्यालय समय में प्रांगण में किसी भी तरह का व्यक्तिगत कार्य न करने को भी कहा।

इसके बाद बच्चों को यूनीफॉर्म के साथ टाई, बेल्ट और आईकार्ड उपलब्ध कराकर उन्हें स्मार्ट बनाने की पहल की। स्वयं ही विद्यालय व घर में मेहनत करके टीएलएम बनाकर विद्यालय के सभी कक्षा–कक्षों को सुन्दर रूप देने का प्रयास किया। विद्यालय भवन की अच्छी पुताई करवाकर नई मेज, कुर्सी व आलमारी आदि की व्यवस्था की। जर्जर फर्श के लिए कालीन खरीदी ताकि बच्चों को एक बेहतर माहौल मिल सके। इसके साथ बच्चों की पढ़ाई अर्थात् उनके शिक्षण पर ध्यान दिया।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें–

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/10/blog-post_22.html

निष्ठुक नियरे राखिए

मैं उन सभी भारतीय नागरिकों से अनुरोध करती हूँ जो ये कहते हैं कि बेसिक के शिक्षक कार्य नहीं करते, वो भी उन शिक्षकों के कार्यों को देखें कि किस तरह विषम परिस्थितियों में भी शिक्षक अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे हैं।

विद्यालयों की दूरी अधिक होते हुए भी और वहाँ तक पहुँचने हेतु पर्याप्त साधनों के न होते हुए भी एन–केन प्रकारेण वो अपना कार्य पूरी तत्परता से कर रहे हैं।

सीमित संसाधनों या संसाधनों के अभाव में भी वे नौनिहालों को शिक्षा देने हेतु प्रकृति में उपलब्ध या अप्रयुक्त वस्तुओं के प्रयोग से शिक्षण सामग्री का निर्माण करके उन्हें अच्छी शिक्षा दे रहे हैं।

जो सभ्य नागरिक ये भूल जाते हैं उन्हें मैं ये याद दिला दूँ कि सरकारी विद्यालयों में भी प्राथमिक स्तर पर कक्षाएँ 5 ही होती हैं। पर अधिकतर सभी विद्यालयों में शिक्षक 5 नहीं होते, विषय उतने ही पढ़ाने होते हैं, समय भी उतना ही होता है तथा शिक्षण कार्य से इतर भी बहुत से कार्य होते हैं।

इसमें एक जो बहुत ज्यादा गौर करने वाली बात है वो ये कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों के जो अभिभावक होते हैं उनका अपने बच्चों को पढ़ाने से दूर–दूर तक नाता नहीं होता और घर जाकर बच्चा कुछ नहीं पढ़ता। इसका तात्पर्य ये बिल्कुल नहीं कि वो पढ़ना नहीं चाहता अपितु उसके पास और भी ऐसे कार्य होते हैं जो उसकी रोजी–रोटी से सम्बंधित होते हैं।

तो शिक्षक को पढ़ना सिखाना, लिखना सिखाना, कंठस्थ कराना सब विद्यालय में ही करना होता है। इन सबके बीच और भी समस्याएँ ये होती हैं कि कभी बच्चे के पास कॉपी नहीं होती कभी पेन्सिल और भिन्न– भिन्न विषयों की कॉपी तो दूर की बात है। हमारे बहुत से शिक्षक अपने पास से बच्चों को ये सब संसाधन मुहैया कराते हैं। पर कब तक करायें?? ये भी एक सवाल है।

अभी समस्याएँ खत्म नहीं हुईं। सरकारी शिक्षकों को कक्षा 1 में जो छात्र मिलता है उसे पढ़ाकर एक वर्ष में ही इतना सिखाना होता है जितना एक प्राइवेट स्कूल का छात्र 4 वर्ष में सीखता है पर फिर भी शिक्षक अपना कार्य पूरी तन्मयता से करता है।

एक विषम परिस्थिति और है कि बच्चों को प्रवेश देने के बाद उनकी विद्यालय में उपस्थिति कैसे अनवरत बनाकर रखी जाए क्योंकि अधिकतर छात्र ऐसे होते हैं जो अपने–अपने घरों में या बाहर कार्य करते हैं। कहीं खेतों में, कहीं ईंटों के भट्ठों पर तो

कहीं फेरी लगाकर बेचने का और इसी कारण वो विद्यालय में उपस्थित नहीं हो पाते।

ये सब देखकर मन दुखता है कि हमारे देश का भविष्य किस ओर जा रहा है।

हर विद्यालय में 5 कक्षाएँ होते हुए भी कहीं–कहीं तो कक्षा–कक्षों की संख्या 1 है और कहीं 2, जबकि 5 कक्षा–कक्ष तो हर विद्यालय में होने ही चाहिए। न शिक्षक पूरे न कक्षा–कक्ष। फिर भी सरकारी शिक्षक पढ़ाता है।

जब बारिश होती है तो अनगिनत विद्यालयों में पानी भर जाता है। कक्षाएँ टपकती हैं इन परिस्थितियों में भी शिक्षक उफ तक नहीं करता। विद्यालय जर्जर हो जाते हैं, कक्षाएँ कहीं मंदिरों में लगती हैं तो कहीं पास के दूसरे विद्यालयों के एक कमरे में पूरा विद्यालय स्थानांतरित कर दिया जाता है, पर सरकारी शिक्षक फिर भी अपना कार्य पूरी कर्मठता से करता रहता है।

इससे अलग हटकर सफाई से सम्बंधित बात करें तो महीनों सफाईकर्मी विद्यालयों में नजर नहीं आते, कितने ही शिक्षक स्वयं विद्यालय साफ करके फिर कक्षाएँ आरंभ करवाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें सफाई करने से परेशानी है पर हाँ समय तो शिक्षण कार्य वाला ही जाता है इन कार्यों में और शिक्षक का कार्य प्रतिदिन सफाई करना नहीं वरन छात्रों के जीवन पर पड़ी धूल को साफ करना है।

इसके अलावा हर प्राइवेट स्कूल में वित्तीय संबंधी कार्यों के लिए अलग से पद होता है जबकि यहाँ ड्रेस सिलवाने से लेकर दूध बाँटने तक हर कार्य प्रधानाध्यापक को ही करना होता है जबकि कुछ विद्यालयों में एक प्रधानाध्यापक के अलावा केवल एक सहायक अध्यापक ही नियुक्त है। फिर भी सारे कार्य समय पर होते हैं। इसके अतिरिक्त मध्याह्न भोजन बनवाने का कार्य अपने आपमें एक अलग विभाग का कार्य है पर इसे वो प्रधनाध्यापक पूर्ण करता है जिसे विद्यालय में बच्चों को पढ़ाना भी होता है। सब्जी से लेकर दूध, मसाले, किताबें, जूते, स्वेटर ढोने का कार्य शिक्षक ही करते हैं। लेकिन फिर भी वो उन बच्चों को शिक्षा देने में कोई कोताही नहीं बरतते।

ये तो अभी आरंभ है ....ऐसी ही ना जाने कितनी सम–विषम परिस्थितियाँ आती हैं, जाती हैं पर हम शिक्षक अपना शिक्षण कार्य पूरी लगन और ईमानदारी से करते हैं।

इसलिए जरा सोचिए.....फिर बोलिये ....

पूजा सचान(स०अ०)
अंग्रेजी माध्यम प्रा०वि०मसेनी
बढ़पुर, फर्रुखाबाद

टी.एल.एम. संसार

पार्ट्स ऑफ बॉडी

कक्षा–3 व 4

बनाने की विधि –यह एक रोलिंग क्यूब टी एल एम है। यह क्यूब 4 शीटस के टुकड़ों से बना है। सबसे पहले 30सेमी×30सेमी की शीट लेकर 10सेमी×10सेमी के 9 समान खाने बनाएँगे। दूसरी शीट को 28.5 सेमी×30 सेमी में लेकर 28.5 सेमी को प्रत्येक 9.5 सेमी तथा 30 सेमी को 9.5+9.5+9.5+1.5 के 3 समान खाने बनाएँगे। तीसरी शीट को 27सेमी×29सेमी में लेकर 27 सेमी को प्रत्येक 9 सेमी तथा 29 सेमी को 9+9+9+2 के 3 समान खाने बनाएँगे। चौथी शीट को 25.5 सेमी×19 सेमी में लेकर 25.5 सेमी को प्रत्येक 8.5 सेमी तथा 19 सेमी को 8.5+8.5+2 के 2 समान खाने बनाएँगे।

अब हमने जो दूसरी शीट का 1.5 सेमी लिया है, उसका बीच का 1.5 सेमी हिस्सा रखेंगे बाकी की 1.5 सेमी कटिंग कर देंगे। इसी प्रकार सभी शीट्स में जो 2 सेमी रखा है उसको भी इसी प्रकार बीच वाला हिस्सा रखकर बाकी को काट देंगे।

इस बीच के हिस्से से ही हम सभी शीट्स को आपस मे चिपकाएँगे।

इनको चिपकाने के बाद एक बड़ी शीट बन जाएगी, जिसके आमने– सामने वाले खाने के हिस्से काट देंगे। इस प्रकार से हमारी शीट का एक बॉक्स बन जायेगा। जिसको मैंने शरीर के अंगों के रूप में बनाया है। इस बॉक्स का ढक्कन बनाने के लिए 16.5 सेमी×16.5 सेमी की शीट लेकर चारों ओर 3 सेमी छोड़ इनको आपस में चिपकाकर ढक्कन बनाएँगे।

इस प्रकार से हमारी शीट का रोलिंग क्यूब बन जायेगा, शीट पर धागा लगाकर हम दीवार पर भी लगा सकते हैं या बॉक्स की तरह भी रख सकते हैं।

उपयोग विधि–

https://youtu.be/V3GjPL5UgKo

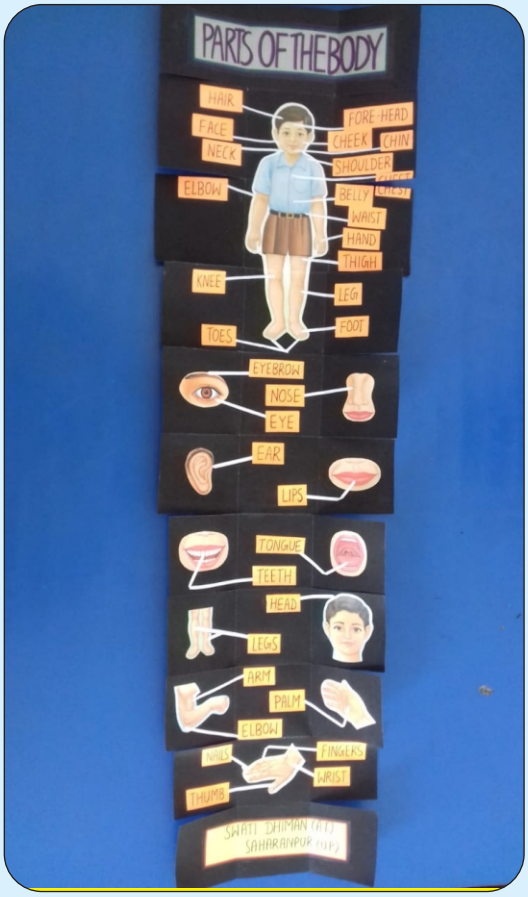

Swati Dhiman
P.s. Subhri Mehrab
block- Baliakheri
Saharanpur

अक्षर डमरू

नाम– अक्षर डमरू
कक्षा– 1 एवं 2
आवश्यक सामग्री – पुरानी माचिस की डिब्बियाँ, आइसक्रीम स्टिक, फेविकॉल, कागज की पर्चियाँ।।
बनाने की विधि– माचिस की डिब्बियों के पीछे आइसक्रीम स्टिक फेविकॉल की सहायता से चिपका लेते हैं। फिर माचिस के ऊपर क्राफ्ट पेपर चिपका कर उन सबके ऊपर हिंदी वर्णमाला के सारे व्यंजन अक्षर अलग–अलग लिख लेते हैं। प्रत्येक अक्षर के माचिस के अंदर एक पर्ची जिसमें उसी अक्षर के सभी मात्राओं से बनने वाले शब्द होते लिख कर मोड़ कर चिपका देते हैं। माचिस के दोनों किनारों में धागे द्वारा कठोर सजावटी गोलियों को लगाकर डमरू का आकार दे देते हैं।।
इस प्रकार ये अक्षर डमरू तैयार!!

उपयोग विधि – सभी डमरू एक साथ रखकर एक–एक करके बच्चों को बुलाकर डमरू बजाने को कहेंगे साथ ही उसके अंदर की पर्ची निकाल कर पढ़ाने का भी अभ्यास कराएँगे!!

अर्चना मिश्रा (स अ)
प्रा वि पनकापुर, बहादुर नगर
कानपुर नगर

English Medium Diary

A heartily welcome to everyone.

First of all a very big thanks to our education department for taking a very right step to change the medium of instruction in basic school from Hindi to English.

This will become a turning point for all those students who want to learn in English medium and also in a good environment. We are lucky to be a part of it. We are not just teaching them, we are trying to train them so that they can face the world with full confidence content and context. That is why we always use play way method to teach them. Our activities are - celebrating birthday of all great personalities, celebrating all festival, annual function, science exhibition and also birthday of students. Giving appreciation is our routine activity in different fields.

Requirement - Allthough the government is providing many things yet we require a few more like good power supply, projector, computer (education technology).
Necessary -accountability and real monitoring to self.
Challenge- Definitely it is a big challenge to teach students in English medium but not impossible slowly and steady this challenge can be won.

Ravindra Bachchan
(assistant teacher)
Primary School Dattipur
Block & District Bhadohi

शिक्षण गतिविधि

आओ बोलो जाओ

गतिविधि विवरण–
चूँकि बच्चों को खेल खेलना अत्यंत रुचिकर लगता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बच्चे राज्य तथा राजधानियों का नाम याद करने से घबराते हैं इसलिये हमने खेल के माध्यम से बच्चों को राज्य तथा राजधानियाँ याद कराने का प्रयास किया जिसके बहुत अच्छे परिणाम रहे।
उद्देश्य– कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों को राज्य तथा राजधानियों के नाम याद कराना।
पूर्व तैयारी– चोड़े सादे पन्ने पर राज्यों तथा राजधानियों के नाम लिखकर बच्चों के कपड़ों में लगा दें एक पन्ने पर एक राज्य तथा उसकी राजधानी लिखें।
तैयारी–
बच्चों को गोले के आकार में खड़ा करना है।
मुख्य गतिविधि –
चरण 1–
सभी बच्चे अपनी अपनी जगह पर ही जम्प करते हुये गोल–गोल घूमेंगे अत्यधिक रोचकता लाने के लिये music बजा सकते हैं, बच्चे अपनी–अपनी जगह पर डान्स करेंगे। जैसे ही music बन्द हो एक बच्चा घेरे में आकर जम्प करते हुये उस पर लिखे राज्य तथा उसकी राजधानी का नाम बोलेगा, बाकी बच्चे उसे दोहरायेंगे। फिर अगला बच्चा दूसरे राज्य तथा राजधानी का नाम बोलेगा। प्रत्येक बच्चे के जाने के बाद music चलेगा और बच्चे डान्स करेंगे। इस प्रकार बच्चे सभी राज्यों और राजधानियों के नाम बोलेंगे।
चरण 2–
दूसरे चरण में जो बच्चा घेरे में आयेगा वो केवल राज्य का नाम बोलेगा तथा बाकी बच्चे उसकी राजधानी का नाम जम्प करते हुये बोलेंगे।
चरण 3–
तीसरे चरण में बच्चे घेरे में आकर राजधानी का नाम बोलेंगे तथा बाकी बच्चे उसके राज्य का नाम बोलेंगे।
चरण 4–
चौथे चरण की गतिविधि पहले के तीनों चरणों की गतिविधियों का मिश्रण होगी यानी कि जो बच्चा घेरे में आयेगा वो चाहे तो राज्य राजधानी का नाम बोले या केवल राज्य या केवल राजधानी बाकी बच्चों को सम्बन्धित गतिविधि करनी होगी।
लाभ–
1.बच्चों में सीखने के प्रति रूचि बढ़ेगी।
2.बच्चों को राज्य राजधानियों के नाम याद होंगे।
3.बच्चों में वर्गीकरण क्षमता का विकास होगा।
4.बच्चों का अवबोध स्तर बढ़ेगा।
5.बच्चों की विभेदन क्षमता बढ़ेगी।
6.बच्चों में राज्य–राजधानियाँ को याद करने का भय समाप्त होगा।
नोट– शुरुआत में केवल चरण 1 का अभ्यास करायें, जब बच्चों की रुचि बढ़ने लगे तो अगले चरणों का अभ्यास करायें।

श्वेता सिंह (स.अ.)
प्रा.वि.हरिहर नगर
बेरुआरबारी, बलिया(उ.प्र.)

प्रेरक प्रसंग

सरदार बल्लभभाई पटेल

सरदार वल्लभभाई पटेल के पिताजी किसान थे और सरदार पटेल जब छोटे थे तब वे अपने पिताजी के साथ खेत पर जाते थे। एक दिन सरदार पटेल के पिताजी खेत में हल चला रहे थे और सरदार पटेल उनके साथ साथ चलते हुए पहाड़े याद कर रहे थे। वे याद करने में पूरी तरह से तन्मय हो गये और हल के पीछे चलते–चलते उनके पाँव में काँटा लग गया परन्तु सरदार पटेल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा वे उसी तन्मयता से पहाड़े याद कर रहे थे। तभी अचानक उनके पिताजी की नजर वल्लभभाई के पाँव पर पड़ी तो पाँव में बड़ा सा काँटा देखकर एकदम से चौंक गये और तुरंत बैलों को रोककर वल्लभ के पैर से काँटा निकाला तथा घाव पर पत्ते लगाकर खून को बहने से रोका।

सरदार पटेल की इस तरह की एकाग्रता और तन्मयता देखकर उनके पिताजी बहुत खुश हुए और उन्हें जीवन में कुछ बड़ा करने का आशीर्वाद दिया और उनके इस आशीर्वाद को सरदार पटेल ने बखूबी सफल किया।

एक बार बचपन में फोड़े को गर्म सलाख से ठीक करने का प्रसंग भी ऐसा ही था। तब बालक वल्लभभाई अविचलित बने रहे थे। एक बार उन्हें फोड़ा हो गया जिसका खूब इलाज करवाया गया लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। इस पर एक वैद्य ने सलाह दी कि इस फोड़े को गर्म सलाख से फोड़ा जाए तो ठीक हो जाएगा। बच्चे को सलाख से दागने की हिम्मत किसी की भी नहीं हुई। ऐसे में सरदार पटेल ने खुद ही लोहे की सलाख को गर्म किया और उसे फोड़े पर लगा दिया, जिससे वह फूट गया। उनके इस साहस को देख परिवार भी अचंभित रह गया।

यह प्रसंग उनके जीवन को समझने में सहायक है। आगे चलकर उनकी इसी दृढ़ता और साहस ने उन्हें महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और कुशल प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठित किया। देश को आजाद करने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संकलन
ज्योति कुमारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा,
विकास क्षेत्र–औराई,
जनपद–भदोही।

सद्विचार

पं0 जवाहर लाल नेहरू जी के विचार

1: कोई ऐसा पल जो इतिहास में बहुत कम बार आता है वह पुराने को छोड़कर नये की ओर जाना है।

2: संस्कृति मन और आत्मा का विस्तार है।

3: एक सिद्धांत वास्तविकता के साथ संतुलित किया जाना चाहिए तथा लोकतंत्र सबसे अच्छा है क्योंकि बाकी सारी व्यवस्थाएँ बुरी हैं।

4: तथ्य तो तथ्य होता है, आपके पसंद न करने पर गायब नहीं हो जायेगा।

5: कार्यवाही करने के लिए प्रभावी होने के लिए स्पष्ट रूप से कल्पना की छोर तक निर्देशित किया जाना चाहिए।

6: कभी भी महान कार्य और छोटे लोग एक साथ नहीं चल सकते।

7: हमेशा ही अज्ञानता बदलाव से डरती है।

8: नागरिकता देश की सेवा में होती है।

9: लोकतंत्र और समाजवाद लक्ष्य पाने के साधन हैं।

10: शांति के बिना सभी सपने खो जाते हैं और राख में मिल जाते हैं।

11: जो व्यक्ति सफल हो जाता है वह हर चीज फिर शांति और व्यवस्था के लिए चाहता है।

12: जीवन में डर के अलावा खतरनाक और बुरा और कुछ भी नहीं।

13: जो व्यक्ति भाग जाता है वह शांत बैठे व्यक्ति की तुलना में ज्यादा परेशानी में रहता है।

14 :हम वास्तविकता में क्या हैं यह अधिक मायने रखता है बजाय इसके कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं।

15: जब भी हमारे सामने संकट और गतिरोध आते है, उनसे हमें एक फायदा तो होता है कि वे हमें सोचने पर मजबूर करते हैं।

16: हमें असफलता तभी मिलती है जब हम अपने उद्देश्य, आदर्श और सिद्धांतों को भूल जाते हैं।

17: हमें थोड़ा विनम्र रहना चाहिए और यह न सोचें कि शायद सत्य पूर्ण रूप से हमारे साथ ना हो।

18: एक नेता या जुझारू व्यक्ति संकट के समय हमेशा अपने अवचेतन रूप में कार्य करता है।

19: हर हमलावर देश की यह दावा करने की आदत होती है कि यह कार्य वह अपनी रक्षा के लिए कर रहा है।

20: किसी कार्य को प्रभावी बनाने के लिए उसे स्पष्ट लक्ष्य की तरफ दिशा देनी चाहिए।

21: जो व्यक्ति हमेशा अपने ही गुणों का बखान करता है वो सबसे कम गुणी होता है।

22: हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हम चीजों के बारे में बातें ज्यादा करते हैं और काम बहुत कम।

23: यदि पूँजीवादी शक्तियों पर अंकुश नहीं लगाया गया तो वे अमीर को और अमीर और गरीब को और गरीब बना देंगी।

24: हमारी नागरिकता देश की सेवा में ही निहित है।

25: किसी को सुझाव देना और बाद में हमने जो कहा उसके नतीजे से बचने की कोशिश करना बेहद आसान है।

26: एक सिद्धांत को वास्तव में संतुलित किया जाना चाहिए।

27: व्यक्ति की कला उसके दिमाग का सही चित्र है।

28: दक्षता का मतलब होता है की हम मौजूद सामग्री का उचित लाभ उठायें।

29: योग्य और वफादार लोग हमेशा महान उद्देश्यों के लिए कार्य करते है, उन्हें भले ही तब पहचान न मिले किन्तु अंत में पहचान मिल ही जाती है।

30: समय वर्ष बीतने से नहीं मापा जाता बल्कि आपने क्या हासिल किया इससे मापा जाता है।

31: आन्दोलनकारी रवैया पूर्ण रूप से किसी विषय के गहन विचार के लिए ठीक नहीं होता।

32: आप तस्वीर के चेहरे दीवार की तरफ मोड़ के इतिहास का रुख नहीं बदल सकते।

33: आपत्तियाँ हमें आत्म–ज्ञान कराती हैं, ये हमें दिखा देती हैं कि हम किस मिट्टी के बने हैं।

34: दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान होता है।

35: शांति के बिना अन्य सभी सपने गायब हो जाते हैं और राख में मिल जाते हैं।

36: लोगों की कला उनके दिमाग के लिए एक सही दर्पण है।

37: चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।

38: बिना शांति के सभी सपने खो जाते हैं और राख में मिल जाते हैं।

39: जो पुस्तकें हमें सोचने के लिए विवश करती हैं, वे हमारी सबसे अधिक सहायक हैं।

40: हमें थोड़ा विनम्र रहना चाहिए, हम ये सोचें कि शायद सत्य पूर्ण रूप से हमारे साथ ना हो।

संकलन
आकिब जावेद
प्रा. वि.(अँग्रेजी माध्यम)
उमरेहण्डा–बिसंडा
बाँदा,उत्तर प्रदेश

बाल साहित्य

स्वामी और उसके दोस्त

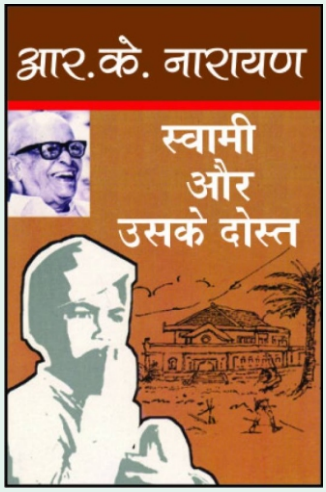

बड़ा मुश्किल होता है बाल साहित्य लिखना लेकिन जो लोग लिखते हैं वो जानते हैं कि ये जितना मुश्किल है उतना ही रोचक भी है। 'स्वामी और उसके दोस्त' सन 1935 में आर के नारायण द्वारा लिखा गया एक अत्यंत रोचक बाल उपन्यास है। ये उनके द्वारा रचित प्रथम पुस्तक भी है। इस पुस्तक को मूलतः अंग्रेजी में Swami and his friends नाम से लिखा गया था। डब्ल्यू एस स्वामीनाथन उपन्यास का मुख्य पात्र है। स्वामी के मित्र राजम, मणि, सोमू, शंकर, मटर आदि हैं। जिनमें राजम पुलिस सुपरिटेंडेंट का पुत्र है जिसके आगे–पीछे स्वामी घूमता रहता है। इसलिए उसे राजम की पूँछ के नाम से चिढ़ाया भी जाता है। वहीं मणि अपनी कद–काठी के अनुसार अपने को पहलवान समझता है और हर समय मरने–मारने की बात करता है। वो सदैव एक मुगदर लेकर घूमता रहता है।

ये उस दौर की पुस्तक है जब भारत देश स्वतंत्र नहीं हुआ था और पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों में बड़ी सख्ती थी। इस सख्ती के प्रति स्वामी का विद्रोह दो बार विद्यालय छोड़ने के रूप में प्रकट होता है। स्वतंत्रता संग्राम की थोड़ी–बहुत झलक भी दिखती है। विद्रोह के नाम पर स्वामी प्रधानध्यापक के कक्ष के शीशे भी तोड़ देता है।

लेखक ने इस उपन्यास में बच्चों के मनोभावों को बड़ी ही सहजता से दिखाया है। जैसे दादी को समझाना, पिताजी से डरना और भगवान जी से प्रार्थना करना कि वो उसके पत्थरों को पैसा बना दें।

इस उपन्यास में बहुत कुछ ऐसा है जिससे बच्चों को सिखाया जा सकता है। स्वामी की गलतियों से सीखने को बहुत कुछ है। आप अपने विद्यालय के पुस्तकालय में इस उपन्यास को रख सकते हैं। इस उपन्यास पर दूरदर्शन ने 8 एपिसोड भी बनाये थे जो आज भी यूट्यूब पर देखे जा सकते हैं। यदि आप उपन्यास न भी खरीदना चाहें तो ये एपिसोड्स बच्चों को दिखा सकते हैं।

बच्चों का कोना

दिनों के नाम

एक सप्ताह में दिन होते सात
आओ आज करें हम इनकी बात

सबसे पहले सन्डे आता
सन्डे होता रविवार
स्कूल की छुट्टी रहती आज
करते हम सारे छूटे काज

संडे के बाद मंडे आता
मंडे होता सोमवार
बैग में रखके सारी कॉपी किताब
स्कूल जाने को हो गये तैयार

पीछे से फिर ट्यूजडे आता
ट्यूजडे होता मंगलवार
सब के होमवर्क की होती जाँच
नहीं करो तो पड़ती है डाँट

सज–धज के फिर वेन्सडे आता
वेन्सडे होता बुधवार
खूब लगाते हम गणित के सवाल
समझ न आये तो ये लगे बवाल

हँसते–हँसते फिर थर्सडे आता
थर्सडे होता गुरुवार
मन लगाकर याद करते पाठ
सुना दिया तो टीचर बोले शाबाश

उछल कूदकर फ्राइडे आता
फ्राइडे होता शुक्रवार
खेलने का मन होता बार बार
आओ मिलकर सब खेलें यार

सबसे आखिर में सैटर डे आता
सैटरडे होता शनिवार
नो बैग डे पर सीखते आर्ट और क्राफ्ट
खेल–खेल में होती पढ़ाई आज।।

दीप्ति दुबे स अ
प्रा वि गंगधरापुर कन्नौज

बचपन

प्यारा सा मासूम सा होता है बचपन
हँसता हुआ मुस्कुरता हुआ होता है बचपन
मुझे भी याद आता है अपना वो बचपन
न कोई चिंता न कोई गम
हर वक्त बस खेलता था मन
हर जिद पूरी होती थी हरदम
नहीं पूरी होने पर कर देते थे
मम्मी पापा की नाक में दम
रोते थे, हँसते थे, दोस्तों के संग खेलते थे,
भाई–बहन से लड़ते थे, झगड़ते थे
उनकी चीजों पर हक अपना जमाते थे,
न मिलने पर उनकी शिकायत भी लगाते थे,
क्या आपको भी याद आ गया अपना बचपन,
अब बच्चों के संग मैं भी बच्ची बन जाती हूँ,
बच्चो के साथ उनके बचपन मे रंग जाती हूँ
फिर से अपना बचपन जी जाती हूँ
कितना अच्छा होता है बचपन .....

वन्दना गुप्ता,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय विशेषरपुर,
विकास क्षेत्र–भदपुरा,
जनपद–बरेली।

बच्चों का कोना

नेवला और हाथी

बहुत समय पहले की बात है एक जंगल के रास्ते में नेवला रहता था। वहाँ से एक हाथी प्रतिदिन निकला करता था। एक दिन नेवले ने कहा हाथी भैया हमसे दोस्ती कर लो। हाथी बोला हमारा इतना बड़ा शरीर हमको क्या करना दोस्ती करके हम अकेले ही काफी हैं। फिर दूसरे दिन हाथी निकला तो नेवला ने कहा हाथी भैया दोस्ती कर लो फिर हाथी ने वही उत्तर दिया। ऐसा कहते–कहते नेवला को एक सप्ताह हो गया हाथी ने नेवला की बात नही मानी, तो नेवला ने सोचा क्या उपाय किया जाय? उसके मन में एक विचार आया कि जिस रास्ते से हाथी निकलता है उसे अंदर ही अंदर खोखला कर दिया जाय और नेवला ने ऐसा ही किया।

हाथी जब उस रास्ते से निकला तो धँस गया और वह चिल्लाने (चिंघाड़ने) लगा बचाओ–बचाओ तो नेवला आया और हाथी से बोला कि देखो मैंने कहा था कि दोस्ती कर लो और आपने नहीं की हाथी बोला ठीक है, मैं दोस्ती कर लूँगा, मुझे बाहर निकालो। तो नेवले ने हाथी से कहा एक पैर ऊपर उठाओ हाथी ने पैर ऊपर उठाया तो नेवले ने उसके पैर के नीचे मिट्टी पूर (डाल) दी फिर दूसरा पैर उठाने को कहा और उसके नीचे भी मिट्टी डाल दी,इसी प्रकार चारों पैरों के नीचे नेवला ने मिट्टी डाल दी और हाथी बाहर निकल आया और दोनों में मित्रता हो गई ।

शिक्षाः– कभी घमंड नही करना चाहिए

अशोक कुमार शुक्ला,
प्राथमिक विद्यालय सिचौरा
विकास खण्ड–कबरई,
जनपद–महोबा।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

9 का पहाड़ा तथा मुहावरों का संगम

नौ एकम् नौ (९) नौ दूनी अठारह (१८)
काम करो मिलकर, होकर एक–एक ग्यारह

नौ तीया सत्ताइस (२७) नौ चौक छत्तीस (३६)
धुन का पक्का, लगनशील व्यक्ति

नौ पचे पैंतालीस (४५) नौ छके चौवन (५४)
सिद्धान्तहीन व्यक्ति थाली का बैंगन

नौ सते तिरसठ (६३) नौ अठे बहत्तर (७२)
पैर पसारो उतने, जितनी लंबी चादर

नौ नीयम् इक्यासी (८१) नौ दाहम् नब्बे (९०)
अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/09/9.html

पूजा सचान,
सहायक अध्यापक,
English Medium
Primary School Maseni,
Block- Barhpur
District- FARRUKHABAD

माह का मिशन

इस समय चारों तरफ त्यौहारों की धूम है। अभी नवरात्रि, दशहरा एवं करवा चौथ का पर्व हमने बड़े ही धूमधाम से मनाया और साथ ही बेटियों की सुरक्षा के साथ बेटों को भी सही राह पर ले जाने का संकल्प लिया है। अब इस माह में भी कई सारे त्योहार हैं, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, देव दीपावली, बाल दिवस महत्वपूर्ण रूप से मनाए जाने हैं। हम सब निश्चित रूप से अपने विद्यालय में त्यौहार से सम्बंधित गतिविधियाँ बच्चों के साथ बड़े ही मनोयोग से करेंगे। पूर्ण उत्साह के साथ इन त्यौहारों को मनाएंगे। तो क्यों न इस माह को बच्चों को समर्पित किया जाए।

अब आप सोच रहे होंगे कि इसके लिये क्या और कैसे किया जाए तो ज्यादा सोचिए मत, बस सबके साथ खुशी–खुशी त्यौहार मनाइए, इसी में हमारे माह का मिशन भी पूरा करिए। परीक्षाओं के बाद ही दीपावली का त्यौहार है तो हम सब अपने विद्यालय में इससे सम्बन्धित गतिविधियाँ जैसे रंगोली बनाना, दिये सजाना, आकाशदीप बनाना बच्चों से कराएँ। यहीं हमारा टास्क खत्म नही होता, अभी यह तो बस शुरुआत है, इसके बाद बच्चों द्वारा दीपावली के अवसर पर जो भी गतिविधियाँ करी जाएँ जैसे– किसी को मिठाई वितरित करना, किसी का दुर्घटनाग्रस्त होने पर सहायता करना इत्यादि जो भी कार्य किये गए हैं, उन सबको मिलाकर एक बाल अखबार–पत्रिका बनाई जाए और उसका प्रकाशन बाल दिवस पर करके बच्चों को उनके प्रिय चाचा नेहरू के जन्मदिन पर उन्हें उन्हीं के द्वारा किये गए कार्यों को पहचान देकर उन्हें सम्मानित किया जाए। जिस बच्चे के द्वारा सबसे उत्कृष्ट कार्य किया गया हो उसे सम्मानित भी किया जाए।

बात शिक्षिकाओं की

जो नारी हैं, माँ है, न जाने कितने रिश्तों को समेटे हुए विद्यालय परिवार में आकर वो बन जाती है महिला शिक्षिका। वो भर सकती है हर बच्चे में जीवन की, स्नेह की, आध्यात्म की खुशबू। वह चाहें तो करा देती है सबका जीवन मूल्यों के जीवन कौशल से परिचय, वह चाहें तो ले आती है सबके चेहरे पर अमिट मुस्कान, वही दिखाती है मानवीय मन के सौन्दर्य, जिजीविषा के सृजन के मंजर।

आओ मिलते हैं महिला शिक्षिकाओं से ....

अन्दर आते ही सभी से अलग एक शिक्षिका को जीवंतता से भरपूर आत्मविश्वास से लबरेज बहुत सी बच्चियों से घिरा पाया। मालूम हुआ शनिवार की गतिविधि कार्यशाला में कुछ न कुछ नया सीख रहे हैं।

अपने काम में खोकर उनको आभास नहीं हुआ कि कितनी देर से कोई है दरवाजे पर, जब आभास हुआ तो मुस्कान के साथ स्वागत किया।

अपने विद्यालय के बारे में बताकर बैठने को कहा। उसी समय आधी छुट्टी की घंटी बजी तो देखती ही रह गयी।

इतने सारे बच्चे उपस्थित थे, बच्चों को पंक्ति मे बैठाकर जल्दी–जल्दी भोजन कराया। स्वच्छता में हाथ धोने का ध्यान रखा। इतनी फुर्ती शायद मैं भी न दिखा पाती। दिव्यांग होते हुए भी मात्र एक अध्यापक के साथ प्रधानाध्यपिका के पद पर इतनी ऊँची व्यवस्था, कर्तव्यपरायणता व कर्मठता को देखकर, इस महिला को मन ही मन नमन करते हुए अपूर्व ऊर्जा का संचार हुआ मन में।

एक दिन ऐसे विद्यालय में जाने का मन हुआ। जहाँ की प्रधानाध्यापिका के लिये सरल शब्दों में कह सकते हैं कि कोई पसंद नहीं करता।

देखा बच्चों से बोलने का ढंग बात – बात पर दुत्कारना, भला–बुरा कहना, बिलकुल संवेदनहीन व सहनशीलता न होने पर उन्हें कोई पसंद नहीं करता था।

पूरे दिन वे अपने कमरे में अकेली रहती हैं।

जानने की कोशिश की कि किन परिस्थितियोंवश उनका व्यवहार ऐसा है, उत्तर मिला नहीं।

उनका व्यवहार ऐसा है, महिला शिक्षिका बच्चों में खोज विश्लेषण व विषयों की समझ, जीवन संदर्भो की जानकारी, लड़कियों को बहुत सी चुनौतियों के लिये तैयार करना, इन मूल दायित्वों का निर्वहन वो कैसे कर पाती होगी।

मन ने प्रश्न किया, काश ये बच्चों से विद्यालय में रुबरु हो पाती तो जान पाती कि जीवन कितना खूबसूरत और अनमोल है और एक ऐसे विद्यालय में जाने का मौका मिला, जहाँ मूक बधिर बच्चे पढ़ते हैं।

विद्यालय की सुन्दरता, आर्ट गैलरी हर कक्षा में घूम–घूमकर देखा तो दीवार का हर कोना बोल रहा था। तभी एक शिक्षिका आयी और बोली कि आपको विद्यालय घुमाऊँ, मैं चल पड़ी। आधा घंटा उसने अपनी मधुर वाणी से बच्चों के विषय में बताया।

वो इतनी खुश थी कि बच्चों के साथ पता ही नहीं चला, कब उसने टेपरिकॉर्डर पर गीत बजा दिया।

''मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे–मोती'' और बच्चे थिरकने लगे। उस समय लगा, मूक मैं भी हूँ, बधिर मै भी हूँ। क्योंकि मन की भाषा मन ही महसूस कर सकता है। जो आनन्द, उल्लास उस क्षण उन बच्चों व उस शिक्षिका के साथ महसूस किया, वो आज लिखते हुए भी आँखों में आँसू बन जीवित हो उठा।

जो हीरे–मोती इस शिक्षिका ने समाज को दिये हैं उसके लिये क्या कोई पुरस्कार, सम्मान है जो दिया जा सकता है।

सभी महिला शिक्षिकाओं के लिये एक प्रश्न है, महिला क्या है?

धैर्य, प्रेम, सरलता, सहजता, कर्मठता, अनुशासन देने की प्रबल उत्कंठा हैं हममें।

क्या हम शिक्षिका हैं? अपने व्यवहार से, मधुरता से, आत्मीयता से, करुणा से, सजगता से अपनी झलक को महसूस किया है। अपने लिये सम्मान महसूस किया है उनकी आँखों में, जिनके बच्चों को पढ़ाया है हमने।

नीलू चोपड़ा
ABRC समन्वयक (हिन्दी)
वि.क्षे. –बलियाखेड़ी
जिला सहारनपुर

कस्तूरबा विशेष कस्तूरबा विद्यालयों में 'एल्युमिनाई बैठक'

विद्यालय समाज का लघु रूप है। विद्यालय समाज से और समाज विद्यालय से जुड़ा रहे इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शासन की मंशा के अनुसार कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में 'एल्युमिनाई बैठकें' आयोजित की जाती हैं।

इन बैठकों का आयोजन वर्ष में दो बार किया जाता है। इनमें विद्यालय की पूर्व छात्राएँ नवीन छात्राओं से व विद्यालय परिवार से मेल–मिलाप, प्रोत्साहन व प्रेरणा के आधार पर ऊर्जा देती व लेती हैं। इस तरह जीवन में एक अविरामता और निरंतरता का क्रम चलता रहता है।

सर्वप्रथम इस बैठक का एक प्रभारी नियुक्त किया जाता है, जिसके नेतृत्व व संरक्षण में ज्ञान व विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती का विधिवत पूजन–अर्चन कर कार्यक्रम के निर्विघ्न समाप्ति की कामना की जाती है। विद्यालय की पूर्व छात्राएँ नियमानुसार अपना पंजीकरण कराकर, विद्यालयी प्रपत्र भरकर अपनी उपस्थिति का आभास देती हैं। इस अवसर पर नवीन छात्राओं के समक्ष पूर्व छात्राएँ अपना परिचय प्रस्तुत करते हुए अपने पूर्वकालिक अनुभवों, वर्तमान स्थितियों और भावी योजनाओं पर प्रकाश डालकर मानों ये आश्वासन देती हैं कि हम अतीतकालीन परिस्थितियों को सोचें...समझें.... और चिंतन–मनन करें, उनसे प्रेरणा लें, वर्तमान ज्ञान–ज्योति का उपभोग करें। भावी भविष्य के निर्माण में पूर्व में आयी हुई भूलों और गलतियों को एक किनारे करते हुए अपने जीवन को अविरामता व अभिरामता की ओर ले जाएँ क्योंकि

''इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना,
किंतु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं।।'

इस चर्चा के बाद बैठक प्रभारी सहित सभी छात्राएँ व विद्यालय परिवार सामूहिक भोजन में सम्मिलित होते हैं। यह सामूहिक भोजन व्यवस्था न केवल आपसी प्रेम व सद्भाव बढ़ाती है अपितु कार्य दक्षता व योग्यता का भी विकास करती है।

क्रमबद्ध पंक्तियों में बैठना... सबकी सुख–सुविधा का सतत् ध्यान रखना और प्रसन्न मुद्रा में भोजन करना और कराना कस्तूरबा विद्यालयों का ध्येय व प्रेय है। क्रियात्मकता शिक्षा का सबसे बड़ा धारदार अस्त्र है जिसके माध्यम से ही किसी भी लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है। विद्यालय को देश व समाज से जोड़ने के लिए हमारे विद्यालय की छात्राएँ 'बाल–अखबार' व 'बाल कॉमिक' का भी विधिवत लेखन–सम्पादन भी करती हैं जिनमें विद्यालय परिसर की गतिविधियाँ, सांस्कृतिक क्रियाकलापों, देश–समाज की प्रेरणादायक वृंतों का समन्वय रहता है। ये क्रियाएं उनके व्यक्तित्व को न केवल विकसित करतीं हैं अपितु नियंत्रित व परिमार्जित भी करतीं हैं। सायंकालीन सत्र में बालिकाएँ खेलकूद से सम्बंधित गतिविधियों का मिलकर आयोजन करती हैं.... और आनंदित होती हैं।

आज चलचित्र जगत में भी बालिकाओं के लिए प्रेरक चलचित्रों की सर्जना

प्रारम्भ कर दी है जिनके माध्यम से उन्हें देशभक्ति, लोकतांत्रिक परम्पराओं के ज्ञान का निर्वहन, नारी सशक्तिकरण आदि बिंदुओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए समाज के उपयोगी व उत्तरदायित्व पूर्ण नागरिक के रूप में विकसित करने का प्रयास इन बैठकों के माध्यम से किया जाता है।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट रूप से अंकित है कि हम देश को ऐसा राष्ट्र बनाने जा रहे हैं जहाँ पर समता–समानता के आधार पर सबको विकास के अवसर प्राप्त हों। इसमें 'लिंग–भेद' अथवा ' धर्म भेद' का कोई अवकाश न हो।

'दहेज प्रथा, बाल –विवाह, बेमेल विवाह' जैसी कुरीतियों के प्रति सावधान कराना हम अपना कर्तव्य मानते हैं। एल्युमिनाई बैठक में पूर्व व वर्तमान छात्राओं के मध्य हुई चर्चा और वार्तालाप में हर इकाई अपने भावी सपनों को भी रेखांकित करने का प्रयास करती हैं जिन्हें बड़ी बहनें अपने अनुभवों के आधार पर संशोधित व निर्देशित करती हैं। इसका यह परिणाम होता है कि बालिकाओं को अपना 'अग्रिम शिक्षा पथ' व 'जीवन में कुछ बनने का लक्ष्य' लगभग स्पष्ट होने लगता है।

महादेवी वर्मा ने कहा था–'हम लक्ष्य के ऊपर दृष्टि रखकर ही लक्ष्य को पाने में समर्थ हो सकते हैं। लक्ष्य से नीचे दृष्टि रखकर उसे छू पाना सम्भव नहीं है।''छात्राएँ कविताओं, कहानियों, प्रहसनों और नाटिकाओं के द्वारा ज्वलंत मुद्दों सामाजिक बिंदुओं को उठातीं हैं और प्रेरणा व आनंद प्राप्त करतीं हैं।

इस 'एल्युमिनाई बैठक'का विशद् उद्देश्य यही है कि आज की छात्राएँ कल की भावी पीढ़ी की निर्मात्री हैं। समाज निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः यह आधी आबादी समाज के लिए उपयोगी बनें। अतीत से पोषक तत्वों को ग्रहण करे। नवीन समाज की संरचना करें और अपने अस्तित्व को पहचानें। दबी–कुचली अशिक्षित नारियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों की सही–सही जानकारी दे सकें। सबके साथ मिल–जुलकर एक नये सभ्य ...सम्पन्न.. समृद्ध... भारत का निर्माण करें।

अतः इन बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हम यह कह सकते है–

''सुकोमल कल्पना कर लो।
सृजन की साधना कर लो।
सुखद भिनसार की बेला।
तिमिर से त्राण के दिन हैं।
यही निर्माण के दिन हैं.....
यही निर्माण के दिन हैं।

पूनम यादव, KGBV
नगर क्षेत्र,कासगंज।

योग–विशेष

योगाभ्यास का उचित समय

किसी भी प्रकार की योग साधना के लिए काल एवं ऋतु का बहुत महत्व है। किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिए एक उपयुक्त सही समय होता है। उसी प्रकार योग साधना को प्रारंभ करने के लिए भी ऋतु एवं समय का ज्ञान होना आवश्यक है।

''काली हि नाम भगवान स्वयंभूरनादि मध्यनिहाने।''

अर्थात् काल ही स्वयंभू, अनादि एवं अनन्त है। महर्षि घेरण्ड ने प्रथम स्थान और काल के चुनाव पर ही बल दिया है। सामान्य रूप से योग हेतु जो स्थान और समय के नियम बताते हैं,वे निम्न हैं–

क. योगाभ्यास का सर्वोत्तम समय सूर्योदय से पूर्व एक घंटे तक का है एवं स्थान का अभ्यास तो ब्रह्म मुहूर्त में ही लाभकारी बताया गया है।

ख. सामान्य वातावरण होना चाहिए, अर्थात् अधिक ठंड एवं गर्मीयुक्त वाला वातावरण नहीं होना चाहिए। योगाभ्यास में ऐसे बहुत से अभ्यास हैं जो अधिक ठंड में नहीं किए जा सकते, जैसे कुंजल, शंखप्रक्षालन आदि।

ग. खुले स्थान में अधिक हवादार, तेज हवा, वर्षा ऋतु आदि में अभ्यास आरंभ नहीं करना चाहिए।

घ. बंद कमरे में खिड़की, दरवाजे बंद करके भी अभ्यास नहीं करना चाहिए।

ड़. भोजन के तुरंत पूर्व एवं तुरंत बाद में भी अभ्यास नहीं करना चाहिए। इससे न अभ्यास फलदायक होगा न ही खाना पचेगा।

योगाभ्यास एक साधना है और साधना में सफल होने के लिए उचित स्थान की महत्ता का वर्णन कई ग्रंथों में किया गया है। योगाभ्यास में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए उचित स्थान, वातावरण, रहन–सहन, विचारों आदि का ख्याल विशेष आवश्यक है। शोरगुल से दूर खुली हवा में, सुरम्य वातावरण में प्रकृति की गोद में जो आनंद एवं सुविधा होगी वह कहीं और ढूँढना है। उचित समय एवं वातावरण का भी योगाभ्यास में अति महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारंभिक अभ्यर्थियों को विशेष रूप से काल निर्णय एवं ऋतु निर्णय करके ही योगाभ्यास करना चाहिए। ऋतु के संबंध में महर्षि घेरण्ड कहते हैं–

बनते शरदि प्रोक्तं योगारम्भं समाचरेत ।
तदा योगी भवेत्सिडो रोगान्मुकतो भवेदध्रुवम।।

अर्थात् बसन्त और शरद ऋतु में अभ्यास प्रारंभ करना चाहिए। इन ऋतुओं में अभ्यास प्रारंभ करने से सिद्धि मिलती है और रोगों से निवृत्ति होती है। बसन्त ऋतु ''बसन्त चैत्र बैसाखो'' चैत्र और बैशाख में बसन्त ऋतु, ''शरदश्विनकार्तिको'' शरद ऋतु अश्विन व कार्तिक में आती है। इन महीनों में ऋतुएँ शरीर के अनुकूल रहती हैं। शरीर के लिए यह आवश्यक है कि वह जो भी अभ्यास करे और उसके द्वारा शरीर व मन पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसे हम सह सकें। सही मौसम में यदि योगाभ्यास प्रारंभ किया जाता है तो योगाभ्यास के द्वारा शरीर में होने वाले परिवर्तनों को सहन कर लेता है एवं साथ ही साथ सहनशीलता एवं सामर्थ्य में वृद्धि होती है एवं अगले कठिन अभ्यासो के लिए मन व शरीर दोनों तैयार हो जाते हैं।

हेमंत, शिशिर, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु में योगाभ्यास आरंभ नहीं करना चाहिए। यह अभ्यास रोगप्रदायक होता है।

डॉक्टर वागीश अवस्थी
प्रधान अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय तरसेउरा
ब्लॉक रेउसा सीतापुर

खेल–विशेष

कबड्डी

कबड्डी का खेल पूर्णतया भारतीय खेल हैद्य भारतीय परिवेश में यह खेल देश के विभिन्न प्रांतो में खेला जा रहा है। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी इसे पूर्ण मान्यता नहीं मिली है, फिर भी एशियाई स्तर पर पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, चीन, जापान, कोरिया आदि देशों में इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। इसकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण यह है कि बिना किन्हीं उपकरणों के इसका आयोजन संभव हो जाता है।

1. प्रत्येक टीम में 12 खिलाड़ी होते है, लेकिन एक समय में केवल सात खिलाड़ी मैदान में खेलते हैं। शेष पाँच खिलाड़ी सुरक्षित होते है, जिन्हें विशेष परिस्थितियों में प्रयोग किया जाता है।
2. मैच के लिए 20–20 मिनट की दो अवधि का प्रयोग किया जाता है एवं बीच में 5 मिनट का विश्राम दिया जाता है। 20 मिनट के बाद दोनों टीमें अपना खेल क्षेत्र बदल देती हैंद्य महिलाओ के लिए 15–15 मिनट की दो अवधि का प्रयोग किया जाता हैद्य विश्राम वही 5 मिनट का होता है।
3. खेल के दौरान मैदान से बाहर जाने वाला खिलाड़ी आउट माना जाता है।
4. संघर्ष आरंभ होने पर लॉबी का क्षेत्र भी मैदान का हिस्सा माना जाता है।
5. बचाव करने वाली टीम के खिलाड़ी का पैर पीछे वाली रेखा से बाहर निकाल जाने पर वह आउट मान लिया जाता है।
6. रेड करने वाला खिलाड़ी लगातार कबड्डी–कबड्डी शब्द का उच्चारण करता रहता है।
7. एम्पायर द्वारा रेडर को किसी नियम के उल्लंघन पर सचेत करने के बाद भी यदि वह फिर भी नियम का उल्लंघन करता है, तो उसकी बारी समाप्त कर दी जाती है तथा विपक्ष को एक अंक दे दिया जाता है, किन्तु रेडर को आउट नहीं दिया जाता।
8. जब तक एक रेडर विपक्षी टीम के क्षेत्र में रहता है, तब तक विपक्षी टीम का कोई भी खिलाड़ी रेडर की टीम में रेड करने नहीं जा सकता।
9. रेडर द्वारा विपक्ष के क्षेत्र में साँस तोड़ने पर उसे आउट माना जाता है।
10. यदि एक से अधिक रेडर विपक्ष के क्षेत्र में चले जाते हैं, तो एम्पायर उन्हे वापस भेज देता है व उनकी बारी समाप्त कर दी जाती है। इन रेडरों द्वारा छुए हुए खिलाड़ी आउट भी नहीं माने जाते और न ही विपक्षी खिलाड़ी इनका पीछा करते हैं।
11. खेलते समय यदि किसी टीम के एक या दो खिलाड़ी शेष रह जाते हैं, तो कप्तान को अधिकार है कि वह अपनी टीम के सभी सदस्यों को बुला सकता है। इसके बदले

विपक्ष को उतने अंक एवं 'लोना' के दो अंक प्रदान किए जाते हैं।

12. रेडर यदि बोनस रेखा को पार कर लेता है, तो उसे एक अंक दिया जाता है।

13. जो टीम टॉस जीतती है, वह या तो पाले का चुनाव करती है अथवा प्रथम आक्रमण मध्यांतर के बाद पाले का आदान–प्रदान करके दूसरे पक्ष का खिलाड़ी प्रथम आक्रमण करेगा।

14. यदि खिलाड़ी के शरीर का कोई अंग क्रीडा–क्षेत्र से बाहर कि जमीन को स्पर्श करता है, तो उस खिलाड़ी को आउट घोषित कर दिया जाता है।

15. असभ्य अथवा उददंड व्यवहार के लिए रेफरी खिलाड़ी को चेतावनी दे सकता है, विपक्ष को अंक दे सकता है अथवा खिलाड़ी को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से अपात्र घोषित कर सकता है। संपूर्ण टीम को भी अपात्र घोषित किया जा सकता है।

16. स्पर्धा के समय एक रेफरी, दो एम्पायर, एक अंक लेखक तथा दो सहायक अंक लेखक का होना आवश्यक है।

17. किसी विशेष परिस्थिति में कप्तान दो टाइम आउट ले सकता है, जिनकी अवधि 30–30 मिनट सेकंड की होती है, लेकिन इस अवधि में खिलाड़ी अपना स्थान नहीं छोड़ सकते।

18. कोई भी रेडर अथवा विपक्षी खिलाड़ी किसी को जबरदस्ती धक्का देखकर सीमा रेखा से बाहर गिराने की चेष्टा नहीं कर सकता।

19. किसी रेडर के बिना पारी के विपक्षी टीम में रेड करने जाने पर अम्पायर उसे वापस भेज सकता है यदि ऐसा बार–बार होता है, तो अम्पायर उस पक्ष को एक बार चेतावनी देता है। उसके पश्चात विपक्ष को एक अंक।

20. जब एक टीम दूसरी टीम के सभी खिलाड़ियो को आउट कर देती है, तो उसे एक 'लोना' मिलता है। इसमे दो अंक अतिरिक्त दिए जाते है। तत्पश्चात खेल पुनः आरंभ होता है।

21. विपक्षी टीम के खिलाड़ी उसी क्रम में जीवित किए जाते है, जिस क्रम में वे आउट होते हैं।

22. एक बार बदले गए खिलाड़ी को पुनः खेल में प्रविष्ट नहीं किया जा सकता।

23. यदि दोनों टीमों के निश्चित अवधि के अंदर अंक समान होते हैं, तो उस अवधि में अतिरिक्त 5–5 रेड दी जाती है।

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

ममता त्रिपाठी
विद्यालय का नामः– पूर्व माध्यमिक विद्यालय लौवार,
विकासखंडः– बाबा बेलखरनाथ धाम जिला–प्रतापगढ़

सबसे पहले जब मैंने स्कूल ज्वाइन किया तो पाया कि बच्चे वही पुराने तरीके से पढ़ाई कर रहे थे–किताबों को पढ़ना, रटना और सुनाना फिर मैंने धीरे–धीरे रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जैसे कि मैं विज्ञान शिक्षक हूँ तो मैंने

(1)विज्ञान के तथ्यों को दैनिक जीवन से जोड़कर समझाया जिसे बच्चे बिना किसी दबाव के सीखने व समझने लगे तथा उत्साह भी दिखाने लगे।

(2) बच्चियों को उनकी शारीरिक विकास व स्वच्छता के बारे में समझाया जिससे बच्चियों की मासिक चक्र से संबंधित शर्म व सभी जिज्ञासाएँ पूर्ण हुईं इसके साथ–साथ मैं हर दो–तीन महीने में डॉक्टरों से रूटीन चेकअप भी करवाती हूँ।

(4) बच्चियों को सैनिटरी नैपकिन उपलब्ध करवाते हैं।

(6)बच्चों को विज्ञान से संबंधित वीडियो तथा पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन भी दिखाती हूँ।

(7)एजुकेशनल गेम खिलाती हूँ।

(8) विज्ञान में प्रयोग भी करवाती हूँ जिससे बच्चे रूचि के साथ सीखते हैं व समझते हैं।

(9)शिक्षा को रुचिकर बनाने हेतु व उबाऊ ना बने इसके लिए सप्ताह में योगा भी करवाती हूँ।

(10)आर्ट एंड क्राफ्ट के अंतर्गत बुनाई कढ़ाई इत्यादि भी सिखाती हूँ।

(11)बच्चों को संतुलित व पौष्टिक आहार की जानकारी तथा किससे कौन–सा तत्व प्राप्त होता है व किसकी कमी से कौन सा रोग होता है इन सब की जानकारी भी देती हूँ।

(12) बच्चों को अपने घर व आसपास के लोगों को भी बताने को कहती हूँ एवं महीने में भ्रमण पर भी ले जाती हूँ।

परिणामतः अब बच्चे प्रतिदिन विद्यालय यह सोच कर आते हैं कि कुछ नया सिखाया समझाया व दिखाया जाएगा। उपरोक्त सभी कारणों एवं प्रयासों से स्कूल में बच्चों की उपस्थिति 80% से अधिक हो गई है।

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

क्रमशः अगले अंक में.....

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात